डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 11/05/20
Page (01)

विषय– संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र
व्याकरण - नाटक (अभिज्ञानशाकुन्तल)

नायिका शकुन्तला का चारित्र चित्रण :

शकुन्तला कालिदास के रूपकों की सर्वोत्कृष्ट नायिका है। शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र और मेनका अप्सरा के संयोग से उत्पन्न हुई एवं ऋषि कण्व द्वारा पालित कन्या है, उसका पालन-पोषण प्रकृति की गोद में होने के कारण वह निसर्ग कन्या बन गई है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ नाटक अभिव्यक्त हुई है –

अनुपम सौन्दर्य :

शाकुन्तल के प्रथम अंक में हमें शकुन्तला अपनी सखियों के साथ वृक्ष-सेन्चन करती हुई दिखाई देती है। वह सोलह सत्रह वर्षीय अनुपम सुन्दरी है। उसका वर्णन नायक दुष्यन्त के मुख से प्रथम अंक में कवि ने इस प्रकार कराया है –

मानुषिषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्॥

राजा उसके सौन्दर्य को देखकर अवाक् हो जाता है। वह उसे देखकर महान् आश्चर्य के साथ कहता है – मानव लोकोत्पन्न स्त्रीजाति से भला इस शकुन्तला जैसे रूप की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? ठीक उसी प्रकार जैसे अपनी

प्रभा से देदीप्यमान तेज विद्युत, प्रकाश अथवा चन्द्रादि का तेज पृथ्वी तल से उत्पन्न नहीं होता। दुष्यन्त शकुन्तला के कौमार्य, सौन्दर्य अथवा लावण्य पर मुग्ध होकर उसे "अनाघ्रात पुष्प, अलून किसलय, अनाविद्ध रत्न, अनास्वादित मधु तथा अखण्ड पुण्यों का फल" कहता है (2.10)। उसके कोमल शरीर पर वल्कल वस्त्र भी शोभा बढ़ाने वाला है। राजा दुष्यन्त का यह कथन शकुन्तला के माधुर्य का व्यंजक है-

"इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥"

दुष्यन्त उसके रूप पर मुग्ध है। वह निश्चिन्त होकर वृक्षों की ओट से आँखे भरके देखना चाहता है। वह उसे विधाता की अनुपम सृष्टि प्रतीत होती है।-

"स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे।
धातुर्विभुत्वमनुचिन्त्य वपुश्च तस्याः ॥"

मुग्धा नायिका :-

शास्त्रीय दृष्टि से शकुन्तला मुग्धा नायिका है। राजा दुष्यन्त का इसके प्रति कथन है- "मुग्धासु तपस्विकन्यासु" तपोवन में पालन होने के कारण वह सुशीला, लज्जाशीला एवं सरलहृदया कन्या है। वह लोकव्यवहार से सर्वथा अनभिज्ञ तथा शीघ्र विश्वास कर लेने वाली नायिका है। राजा दुष्यन्त को देखते ही

Scanned with CamScanner

उसके मन में अनुभूत प्रेमविकार उत्पन्न हो जाता है, जिसे वह तपोवन के आचरण के विरुद्ध समझती है। परन्तु अपने इस भाव को लज्जावश वह अपनी अन्तरंग सखियों से भी नहीं व्यक्त करती। सखियों द्वारा बार-बार अनुरोध करने पर भी वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाती है- "सखि! तपोवन के रक्षक वह राजर्षि जब से मेरी दृष्टि के विषय बने...।" बस इतना आधा कहकर लज्जा के मारे चुप हो जाती है।

गुरुजनों के प्रति सम्मान भाव :-

शकुन्तला अपने पूज्य गुरुजनों के प्रति अत्यधिक आदर भाव रखती है। तपोवन से विदाई लेते समय वह अपने पिता कण्व के चरणों में गिर पड़ती है। सप्तम अंक में दुष्यन्त के साथ मारीच ऋषि एवं अदिति के समक्ष जाने में लजाती है।

Scanned with CamScanner